पद ३२ (राग: झिंझोटी - ताल: दीपचंदी.) श्रीपादश्रीवल्लभ मां पाहि। यतिवर्या दीन करुणाशब्दें करूनी बाही।।ध्रु.।। नगर पीठपुर पूर्व दिशेसी। राजपिता सुमतिच्या कुशी।। दत्तात्रय त्वां आपस्तंब वंशीं। अरूप रूप परी देह धरिलासी।।१।। मुंज लागली सप्तम वर्षी। लग्न लावितां नलगे म्हणसी। देउनि दोन पुत्र मातेसी। बद्रिकाश्रमा पाह्ं गेलासी।।२।। गोकर्णी तीन वर्षे वास । श्रीगिरी चातुर्मास । निवृत्ति संगमाहनी कुरवपुरासी। कृष्णा गंगा वाहे ग्रामासि।।३।। अंबिकापुत्र त्या मतिमंदासी। कृपादृष्टीनें पंडित करिसी।। पुत्र ज्ञानी होय पुढिल जन्मासी। व्रत दिलें तिसी शनिप्रदोषी।।४।। वर दिधला त्वां रजकालागीं।। विदुरनगरिचें राज्यसुख भोगी।। नरसिंह सरस्वती होऊन योगी।। दर्शन देईन मी तुजलागीं।।५।। गंगेमाजी गुप्तचि

झाला। कुरवपुरामधें वासचि केला।। वल्लभेशास्तव कैसा धांवला। तस्कर मारूनि दीन जिवविला।।६।। पाहि पाहि श्री सदुरुनाथा। कृपा करूनि दे दर्शन आतां। तुजविण कोण असे मज दाता।। माणिकदासा तारी दिनानाथा।।७।।